Proceedings & Papers of National Seminar on Jainology (Folder No. : 014012)

Main Title
Foreword
सम्पादकीय
स्वागत अभिभाषण
Inaugural Address of Padmashri K. N. Prasad
अध्यक्षीय अभिभाषण
धन्यवाद अभिभाषण
विषयक्रम
जैन विचारों की आधुनिक प्रासंगिकता -- ३
खण्ड-१ – जैन इतिहास एवं पुरातत्त्व
Jainism in Bihar During Gupta Pala Periods --19
Some Observations on Navagrah Cult in Jain Art --23
Trade in the Samaraiccakaha – Text & Context---29
जैन पुरातत्त्व में सन्दर्भित विदेह और मिथिला--३९
जैनधर्म एवं छोटानागपुर --- ४५
जैनधर्म के तीर्थंकर, आचार्य और वाङ्मय --- ५३
मूर्त अंकनों में जिनेतर शलाकापुरुषों के जीवनदृश्य --- ५८
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में वर्णित तीर्थंकर -- ७२
श्रीलंका में जैनधर्म--- ८५
खण्ड-२ – प्राकृत-साहित्य भाषा एवं साहित्य
जटासिंहनन्दी का वरांगचरित और उसकी परम्परा -- ९१
वसुदेवहिण्डी की खण्ड-कथाएँ--१०६
महावीर और बुद्ध के जीवन और उनकी चिन्तन-दृष्टि-- ११२
प्राकृत-अपभ्रंश छन्द-परम्परा और विकास --१३४
आध्यात्मिक रूपक-काव्य और हिन्दी के जैन कवि ---१४९
खण्ड-३ – जैनधर्म एवं दर्शन
Pali Sakkaya & Prakrit Atthikaya – A Comparative Study ------------------------------------159
जैन दर्शन का वैशिष्ट --१६३
गुणस्थान-सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास --१६९
अनेकान्त और अहिंसा-एक शास्त्रीय परिशीलन---१८६
जैनधर्म के पंच महाव्रत-आज के सन्दर्भ में-- २०७
जैनाचार-एक मूल्यांकन -- २११
जैन एवं हिन्दू धर्म में परमतत्त्व की अवधारणा---२१८
उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णित संन्यास-धर्म -- २३०
महावीर का पंचसूत्री महाव्रत और ब-हदारण्यक के तीन द----------------------------------- २३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org